दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

मई 2010

दिनांकः 10.05.2010 **समयः10.00 बजे से 1.00 बजे तक**

उच्च शिक्षा और शोध संस्थान

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय

एम.ए. प्रथम वर्ष परीक्षा

विषयः हिन्दी प्रश्न पत्रः 1

शीर्षक :हिन्दी साहित्य का इतिहास

समयः 3 घंटे **पूर्णांकः 75**

सूचनाः 1.**पाँच** प्रश्नों के उत्तर लिखिए। **5x15=75**

2.खंड–'क' तथा खंड 'ख' से **दो–दो** प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

3.खण्ड 'ग' अनिवार्य है।

खण्ड–क

1. आदिकाल की राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का विश्लेषणात्मक विवरण दीजिए।
2. ''भक्तिकाल हिन्दी साहित्य का स्वर्ण युग है'–इस कथन की तर्क संगत विवेचना कीजिए।
3. निर्गुण भक्ति साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियों का परिचय दीजिए।
4. रीतिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियों का परिचय देते हुए रीतिमुक्त और रीतिबद्ध काव्य की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

खण्ड–ख

5. आधुनिकता बोध का तात्पर्य स्पष्ट करते हुए आधुनिक हिन्दी साहित्य के विकास में उसकी भूमिका निर्धारित कीजिए।
6. छायावाद की परिभाषा देते हुए हिन्दी की छायावादी काव्य धारा की प्रमुख प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए।
7. ''नई कविता'' ''नई'' क्यों है? इसके इस नामोल्लेख में निहित कारणों का परिचय दीजिए।
8. हिन्दी गद्य के उद्‌भव और विकास पर एक सारगर्भित निबंध लिखिए।

खण्ड–ग

9. निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिए।

   क. पृथ्वीराज रासो

   ख. द्विवेदी युग की काव्य प्रवृत्तियाँ

   ग. प्रगतिवाद की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

****

www.StudyGuideIndia.com

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

मई 2010

दिनांकः 13.05.2010 **समयः10.00 बजे से 1.00 बजे तक**

उच्च शिक्षा और शोध संस्थान

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय

एम.ए. प्रथम वर्ष परीक्षा

विषयः हिन्दी प्रश्न पत्रः 4

शीर्षक :सामान्य भाषा विज्ञान, हिन्दी भाषा का इतिहास एवं हिन्दी व्याकरण

समयः 3 घंटे **पूर्णांकः 75**

सूचनाः 1.किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर लिखिए। **5x15=75**

2.अंतिम प्रश्न अनिवार्य है।

3.सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

1. भाषा किसे कहते हैं? भाषा और बोली में अंतर स्पष्ट कीजिए।
2. ध्वनि विज्ञान की परिभाषा देते हुए ध्वनि विज्ञान के अध्ययन–क्षेत्र को स्पष्ट कीजिए।
3. स्वर किसे कहते है? हिन्दी स्वर ध्वनियों का वर्गीकरण कीजिए।
4. रूप की परिभाषा देते हुए प्रकार्य के आधार पर प्रत्ययों का वर्गीकरण कीजिए।
5. शब्द विज्ञान से आप क्या समझते है? हिन्दी के शब्द स्रोतों की सोदाहरण व्याख्या कीजिए।
6. हिन्दी भाषा के विकास का संक्षिप्त परिचय देते हुए हिन्दी भाषा के मध्यकाल की चर्चा कीजिए।
7. विशेषण किसे कहते हैं? संख्यावाचक विशेषण और परिमाणवाचक विशेषण के अंतर को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।
8. काल की परिभाषा देते हुए उसके प्रकारों की सोदाहरण चर्चा कीजिए।
9. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन पर टिप्पणी लिखिए।

    क. औच्चारणिक ध्वनि विज्ञान

    ख. सम्प्रेषणीयता

    ग. मुख विवर और नासिका विवर

    घ. देशज शब्द

    च. अर्थ विस्तार

    छ. सार्वनामिक विशेषण

****

www.StudyGuideIndia.com

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

मई 2010

दिनांकः 12.05.2010 **समयः10.00 बजे से 1.00 बजे तक**

उच्च शिक्षा और शोध संस्थान

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय

एम.ए. प्रथम वर्ष परीक्षा

विषयः हिन्दी प्रश्न पत्रः 3

शीर्षक :गद्य साहित्य

समयः 3 घंटे **पूर्णांकः 75**

सूचना:1.खण्ड 'क' से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए। **4x10=40**

2.सभी प्रश्नों के अंक समान है।

3.खण्ड 'ख' अनिवार्य है।

खण्ड 'क'

1. ''अधिकार संबंधी अभिमान अनौचित्य का अधिक होता है।'' इर्ष्या निबंध के आधार पर लेखक के इस कथन की पुष्टि कीजिए।

2. धीरोदात्त नायक के शास्त्रीय लक्षणों का उल्लेख करते हुए स्कंदगुप्त का मूल्यांकन कीजिए।

3. कहानी के तत्वों के आधार पर उपेन्द्रनाथ ''अश्क'' की कहानी ''डाची'' का विश्लेषण कीजिए।

4. ''बाणभट्ट की आत्मकथा का भाषा सौंदर्य अद्भुत है'' इस कथन का सोदाहरण प्रमाणित कीजिए।

5. ''मैला आँचल'' उपन्यास ग्राम्मांचल की सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन चर्या का प्रतिनिधि उपन्यास है– सिद्ध कीजिए।

6. किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए।

क.कोठारिन लक्ष्मी का चरित्र चित्रण

ख.''डाची'' कहानी में निम्नवर्ग का जीवन संघर्ष

ग.''भट्टिनी'' का आत्माभिमानी स्वरूप

घ.'स्कंदगुप्त' का सांस्कृतिक परिवेश

खण्ड 'ख''

7. **निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।** **5x7=35**

क. उस हिमालय के ऊपर प्रभात–सूर्य की सुनहरी प्रभा से आलोकित हिमका पीले पोखराज का सा एक महल था। उसीके नवनीत की पुतली झांक्कर विश्व को देखती थी। वह हिम की शीतलता से सुसंगठित थी। सुनहरी किरणों को जलन हुई। तप्त होकर महल को गला दिया। पुतली! डसका मँगल हो, हमारे अश्रु की शीतलता उसे सुरक्षित रखे। कल्पना की भाषा के पंख गिर जाते हैं। मौन–नीड़ में निवास करने दो। छोड़ो मत

अथवा

पवित्रता का माप है मलिनता, सुख का आलोचक है दुख। पुण्य की कसौटी है पाप। विजया! आकाश के सुंदर नक्षत्र आँखों से केवल देखे ही जाते हैं। वे कुसुम कोमल हैं कि, वज्र कठोर, कौन कह सकता है? आकाश में खेलती हुई कोकिला की करुणामयी तान का कोई रूप है या नहीं, उसे देख नहीं पाते। शतदल और पारिजात का सौरभ बिठा रखने की वस्तु नहीं। परन्तु संसार में ही नक्षत्र से प्राणी देखा जा सकते हैं। उन्हीं से स्वर्ग का अनुमान कर लिया जाता है।

www.StudyGuideIndia.com

ख. यदि कहीं पाप है, अन्याय है, अत्याचार है तो उनका आशुफल उत्पन्न करना और संसार के समक्ष रखना लोक रक्षा का कार्य है। अपने ऊपर किए जाने वाले अत्याचार और अन्याय का फल ईश्वर के ऊपर छोड़ना व्यक्तिगत आत्मोन्नति के लिए श्रेष्ठ हो, पर यदि अन्यायी या अत्याचारी अपना हाथ नहीं खींचता तो लोक–संग्रह की दृष्टि से वह उसी प्रकार आलस्य या कायरपन है जिस प्रकार अपने ऊपर किए हुए उपकार का कुछ बदला न देना कृतध्नता है।

अथवा

बहुत दूर तक और बहुत काल से पीड़ा पहूँचाने चले आते हुए किसी धोर अत्याचारी का बना ही लोक की क्षमा की सीमा हैं। इसके आगे क्षमा न दिखाई देगी। नैराश्य, कायरता और शिथिलता ही छायी दिखाई पड़ेगी। ऐसी गहरी उढ़ाती की छाया के धीच आशा, उत्साह और तत्परता की प्रभा जिस क्रोधाग्नि के साथ फूरती दिखाई पड़ेगी, उसकी सौंदर्य का अनुभव सारा लोक करेगा। राम का कालाग्नि सदृश्य क्रोध ऐसा ही है। वह सात्विक तेज है। तामस पाप नहीं।

ग. चैत्र की गोधूली में अपनी सारी तेजी खोकर सूरज ने श्याम–सलोनी संध्या के आँचल में अपना मुँह छिपा लिया था। दूर तक फैली हुई ताड़ों की पत्तियाँ, कुछ मटमैली, कुछ सिंदूरी–सी पृष्टभूमि में गर्दन ऊँची करके सूरज को अतल गहराई में डुबते हुउ देख रही थी। गाय और बैलों के साथ घर लौटते हुए चरवाहे सावित्री–नाम का गीत गा रहे थे। गुलमोहर के लाल–लाल फूल बुस गए और अमलतास की पीली ओढ़नी न जाने कब सरककर गिर पड़ी किन्तु योजनगंधा भी पागल बना रही है।

अथवा

खेत में पाट के लाल पौधों को देखकर जी ललच रहा है। धान की हरी–ही सुई खेत में निकल आई है। भाटी का मोह नहीं टूटता। बधनापर्व की रात में तूने जो जूड़े में फूल लगाया था। उसे नहीं भूला है। धरती का मोह भी नहीं टूट रहा है। प्यारी, हमारे दादा–परदादा पुरैनिया की जेल में मर खप गए। मकई के बाल की तरह उनके बाल भूरे हो गए होंगे। हमारे बच्चे के ढांत दुधिया मकई के दानों की तरह चमकेंगे। उनसे कहना, धरती माता के प्यार की जंजीर में हम बंध गए।

घ. उस समय दक्षिण–समीर मंद गति से बह रहा था। वाटिका के वृक्ष–लता–गुल्म सभी झूम रहे थे। उनकी मूंगे जैसी लाल–लाल किसलय–संपत्ति ने उनकी सारी शोभा को लाल बना दिया था। उनपर गूँजते हुए मौंरों की आवाज़ स्खलित वाणी के समान सुनाई दे रही थी और मलयानिल की मृदृ–मंद तरंगों से आहत होकर वे सचमुच ही झूम रहे जान पड़ते थे। शायद मधुमास के मधुपान में वे भी मत्त थे। अन्तःपुर की परिचारिकाएँ ही नहीं, कुसुम लताएँ भी क्षणा बनी हुई थीं।

अथवा

कालिदास ने भुवनमोहिनी के गौरव को हृदयंगम किया था। वे उच्छृखल पौरुष की निर्मर्याद महत्वाकांक्षा के दोध पहचानते थे। राज्य–गठन, सैन्य–संचालन, मठ स्थापना और निर्जन–वास पुरुष की समताहीन, मर्यादाहीन, श्रृंखलाहीन महत्वाकांक्षा के परिणाम है। उनको नियंत्रित कर सकने की एक मात्र शक्ति नारी है। कालिदास ने इस रहस्यको जाना थ।। इतिहास साक्षी है कि, इस महिमामयी शक्ति की उपेक्षा करने वाले साम्राज्य नष्ट हो गए हैं। मठ ध्वस्त हो गए हैं । ज्ञान और वैराग्य के जंजाल फेन–बुदबुद की भाँति क्षणभँगुर में विलुप्त हो गए हैं।

www.StudyGuideIndia.com

च. जब पहाड़ी आकाश में संध्या अपने रंगीले पर फैला देती, जब विहंग केवल कलरव करते पंकित बाँधकर उड़ते हुए गुँजान झाड़ियों की ओर लौटते और अनिल में उनके कोमल परों से लहर उठती, जब समीर अपनी झोकेदार–तरंगों में बार–बार अंधकार को खींच लाता, जब गुलाब अधिकाधिक सौरभ लुटाकर हरी चादर में मुँह छिपा लेना चाहते थे, तब शीरीं की आशा भरी दृष्टि कालिमा से अभिभूत होकर पलकों में छिपने लगीं। वह जागते हुए भी एक स्वप्न की कल्पना करने लगी।

अथवा

उनके चेहरे पर बेहद मासूमियत थी। उनता ही धुला धुला सा चेहरा था, जितना सुबह उठकर मुँह धोने के बाद निखर आया करता है। साथ–साथ चाय पीते वक्त यह अक्सर बहुत लगाव से उनके चेहरे को देखा करती थी। ओस में धुले हुए कमल सी ताजगी आया करती है ममी के चेहरे पर । पता नहीं ऐसा क्या था ममी के चेहरे में कि, वह डूबी–डूबी सी देखती रह जाती थी।

****

www.StudyGuideIndia.com

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

मई 2010

दिनांकः 11.05.2010 **समयः10.00 बजे से 1.00 बजे तक**

उच्च शिक्षा और शोध संस्थान

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय

एम.ए. प्रथम वर्ष परीक्षा

विषयः हिन्दी प्रश्न पत्रः 2

शीर्षक :आधुनिक काव्य

समयः 3 घंटे **पूर्णांकः 75**

सूचनाः1.खण्ड 'क' से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

2.खण्ड 'ख' अनिवार्य है।

खंडः क **4x10=40**

1. 'साकेत' के नवम सर्ग के आधार पर उर्मिला का चरित्र चित्रण कीजिए।
2. ''कामायनी' छायावादी युग की सर्वश्रेष्ठ रचना है।'' – सिद्ध कीजिए।
3. 'सरोज–स्मृति' के काव्य–वैभव को स्पष्ट कीजिए।
4. 'परिवर्तन' कविता के काव्य–सौंदर्य (अनुभूति एवं अभिव्यक्ति पक्ष) का विवेचन कीजिए।
5. महादेवी की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
6. किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिएः

   क. 'साकेत' की रचना की पृष्ठभूमि ख. 'श्रद्धा' सर्ग की विशेषताएँ

   ग. मुक्तिबोध की काव्यभाषा घ. धूमिल की काव्यभाषा

खंडः 'ख'

7. **निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिएः** **5x7=35**

(क) '' ओ चिंता की पहली रेखा, अरि, विश्व–वन की व्याली;

ज्वालामुखी स्फोट के भीषण, प्रथम कंप–सी मतवाली।

हे अभाव की चपल बालिके, री ललाट की खल लेखा।

हरी–भरी–सी दौड़–धूप, ओ जल–माया की चल–रेखा।

अथवा

और देखा वह सुंदर दृश्य, नयन का इंद्रजाल अभिराम,

कुसुम – वैभव में लता समान चंद्रिका से लिपटा धनश्याम।

हृदय की अनकृति बाह्य उदार एक लंबी काया, उन्मुक्त,

मधु पवन क्रीड़ित ज्यों शिशु साल सुशोभित हो सौरभ संयुक्त।

(ख) चिर–ब्रह्मचर्य–रत, ये एकादश रुद्र धन्य

मर्यादा–पुरुषोत्तम के सर्वोत्तम,अनन्य,

लाल–सहचर, दिव्यभावधर, इन पर प्रहार,

करने पर होगी देवि, तुम्हारी विषम हार।

अथवा

लख शंकाकुल हो गए अतुल–बल शेष–शयन,

खिंच गए दृगों में सीता के राममय नयन

www.StudyGuideIndia.com

फिर सुना – हँस रहा अट्टहास रावण खलखल,

भावित नयनों से सजल गिरे दो मुक्ता–दल।

(ग) तेरी काया को छेद, बाँध कर रची गई वीणा को

किस स्पर्धा से

हाथ करें आधात

छीनने को तारों से

एक चोट में वह संचित संगीत जिसे रचने में

स्वयं न जाने कितनों के स्पंदित प्राण रच गए।

अथवा

अखिल यौवन के रंग उभार

हड्डियों के हिलते कंकाल,

कचों के चिकने, काले व्याल

केंचुली, काँस, सिवार,

गूँजते हैं सबके दिन चार,

सभी फिर हाहाकार!

(घ) प्रात ही तो कहलाई मात,

पयोधर बने उरोज उदार,

मधुर उर इच्छा को अज्ञात

प्रथम ही मिला मृदुल आकार,

छिन गया हाय, गोद का बाल,

गड़ी है बिना बाल की नाल!

अथवा

क्या कहता हो ठहरो नारी! संकल्प अश्रु–जल से अपने

तुम दान कर चुकी पहले ही जीवन के सोने–से सपने।

नारी! तुम केवल श्रद्धा हो विश्वास–रजत नग पग जल में;

पीयूष–स्रोत–सी बहा करो जीवन के सुंदर समतल में।

(च) इसे गमक नट्टिन की चूड़ी के घुँघरू की –

उसे युद्ध का ढोल :

इसे संझा गोधूली की लघु टुन–टुन–

उसे प्रलय का डमरू–नाद।

इसको जीवन की पहली अँगड़ाई

पर उसको महाजृम्भ विकराल काल!

अथवा

हम नदी के द्वीप हैं।

हम नहीं कहते कि हमको छोड़ कर स्रौतस्विनी वह जाय।

वह हमे आकार देती है।

हमारे कोण, गलियाँ, अंतरीप, उभार, सैकत–कूल

सब गोलाइयों उसकी गढ़ी है।

www.StudyGuideIndia.com

www.StudyGuideIndia.com